P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-9*(Part-1) May- 2019
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

वर्तमान समय में हिन्दी भाषा : 'दशा एवं दिशा'

सुशील कुमार
शोधार्थी,
हिन्दी विभाग,
दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा,
धारवाड़, कर्नाटक, भारत

सारांश

एक भाषा राष्ट्र की आत्मा होती है, अतः हिन्दी हमारी राष्ट्रभाषा है। इसलिए प्रत्येक नागरिक का यह कर्त्तव्य बनता हैं कि वह अपनी भाषा का सम्मान करें। एक भाषा के माध्यम से ही व्यक्ति अपने विचारों का आदान–प्रदान करता है। प्रत्येक नागरिक को चाहिए कि वह इस अंग्रेजी की मानसिकता को छोड़कर पूरे गर्व के साथ हिन्दी भाषा को अपने जीवन में अपनाने की शपथ ग्रहण करें। इसके बाद ही सही मायनें में भाषा की दोहरी मानसिकता को छोड़कर हिन्दी भाषा का गौरव बना रहेगा।

मुख्य शब्द : राजभाषा, राष्ट्रभाषा, जनभाषा, अन्तर्राष्ट्रीय भाषा, सरकारी उपेक्षा, भारतीय स्वाभिमान की संवाहिका।

प्रस्तावना

हिन्दी भाषा विश्व की लगभग 3000 भाषाओं में से एक है और यूरोपीय परिवार की भाषा है। भारत देश की आजादी के बाद से वर्तमान समय तक हिन्दी भाषा ने अलग–अलग आयामो से गुजर कर अपनी एक नई पहचान कायम की है। परन्तु इसकी पहचान को लेकर गैर हिन्दी भाषा भारतीय राज्यों में हमेशा ही इसको विरोध का सामना करना पड़ा है। यही कारण रहा है कि यह भाषा राष्ट्रीय भाषा का दर्जा अब तक प्राप्त नही कर सकी, केवल यह राजकीय कार्यकारी भाषा का ही दर्जा प्राप्त किये हुऐ है। अगर हम विदेशों में भाषा की बात करें तो सभी देशों की अपनी भाषा है तथा वे सभी देश भाषायी–स्वाभिमानी देश है, परन्तु 'भारत में यह भाषायी–स्वाभिमान नही मिलता।'[1] भारत देश एक प्रकार की वैचारिक पीड़ा का शिकार हैं, जिसमें क्षेत्रीय विभिन्नता तथा वैश्वीकरण, लेकिन विश्व में अनेकों देश अपनी सांस्कृतिक विरासत व भाषा को अपना गौरव मानते है। परन्तु भारत अपनी ही मानसिक, वैचारिक व वैश्वीकरण की दौड़ में उलझकर रह गया है। हिन्दी भाषा केवल 14 सितम्बर का एक दिन 'हिन्दी दिवस' बनकर रह गई हैं, अब लगने लगा है कि हिन्दी भाषा 'हिन्दी दिवस' के दिन राष्ट्रभाषा स्वाभिमान को जगाने के लिए ही आती है। लेकिन भारतवर्ष से बाहर यह भाषा वैश्विक भाषा बनती जा रही है। परन्तु भारत में ऐसा क्यों नही हो रहा? 'भारतीय आजादी के आन्दोलन में हिन्दी भाषा को दो भागों में विभाजित कर दिया गया हैं, जो आजीविका हिन्दी पर आधारित लोग हैं, दूसरे जो हिन्दी को साधन के रूप में देखते है।'[2] आजादी के तीन दशक बाद से हिन्दी भाषा ने फिर से एक नई उड़ान भरी है। जिनमें हिन्दी भाषा से जुड़ी अलग–अलग क्षेत्रीय व राष्ट्रीय समस्याओं ने हिन्दी के पाठकों का ध्यान बढ़ाया है। जिनमें 'हिन्दी अकादमी दिल्ली' की पत्रिका 'इन्द्रप्रस्थ भारती', 'हरियाणा साहित्य अकादमी, पंचकुला' की पत्रिका 'हरिगन्धा', 'जबलपुर' से निकलने वाली पत्रिका 'पहल', 'उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान' से निकलने वाली पत्रिका 'उत्तर प्रदेश' आदि इसी तरह विभिन्न प्रान्तों की साहित्य अकादमियों से निकलने वाली पत्रिकाएँ हैं, जो साहित्य के विभिन्न विधाओं में हिन्दी के रूप और उसके भाषायी प्रभाव के संदर्भ में उत्कृष्ट कार्य कर रही है। आज हिन्दी में कुछ नए एवं प्रबुद्ध लोगों ने नयी शैली, नए शिल्प एवं नयी अनुभूतियों के साथ हिन्दी की 'दशा एवं दिशा' दोनों को प्रगतिशील बना रहे है। साहित्य में पुस्तकें–पत्र–पत्रिकाएँ, खण्ड– काव्य तथा लम्बी कविताएँ आदि शामिल है। 'पिछले कुछ दशकों से हिन्दी पाठकों में आत्मकथाओं को हिन्दी अनूदित व हिन्दी में ही लिखित पुस्तकों को पढ़ने में रूचि दिखाई है। इसके साथ–साथ हिन्दी भाषा को नई दिशा प्रदान करने के लिए जन संचार के माध्यमों ने आजादी से ही अपनी कमर कसी हुई है। जिसमें टी0वी0 चैनल दूरदर्शन का नाम अग्रणी है।'[3] इसके साथ–साथ आकाशवाणी रेडियो स्टेशन ने भी अपनी पहचान बनाई हैं, इसके साथ ही न्यूज चैनल भी हिन्दी के क्षेत्र में योगदान देते आ रहे है। हिन्दी भारतीय अतीत की एक पहचान है। इस भाषा की रक्षा देश की सीमाओं से भी सर्वोपरि मानी जानी चाहिए, क्योंकि भारतीय चिंतन व चेतना का भाव हमारी हिन्दी भाषा में ही है।

परन्तु दुःख व बड़े खेद की बात है कि भारत विश्व में एक ऐसा देश है, जहां राष्ट्रभाषा जन–जन के सामने आज भी एक विकट प्रश्न बनकर खड़ी हुई है।'[4] हिन्दी साहित्य से जुड़े विद्वानों की हिम्मत तब टूट जाती है, जब भारतीय राज्य व केन्द्र सरकार से उपेक्षा का नजरिया देखने को मिलता है। राष्ट्रभाषा के प्रति सरकारी उपेक्षा हो, उसके नाम पर राजनीति की जा रही हो, तो ऐसे में रचनाकारों, साहित्यकारों व विद्वानों का दायित्व क्या और अधिक नही बढ़ जाता?

'इसी पर बाल कवि वैरागी जी कि वें पंक्तियाँ दोहराई जा सकती है 'मै दीप हूँ तुम्हारा' में लिखी गई है'–

''रातें डरावनी हों, पागल हो सब अंधेरा
लगने लगे कि अब तो दूर है सवेरा।''[5]

जो इसी वर्तमान समय से गुजर रही हिन्दी के एक राष्ट्रव्यापी आन्दोलन की जरूरत हैं, वरना हिन्दी स्वयं बोल पड़ेगी कि –

''मैंने देखी है समय–समय पर
मुझे मिटाने वाली ऋतुएं
मैंने देखी है मेरी ही उखड़ती जड़ें
मैंने देखी है मेरे लेखकों की टूटती कलमें
जिसको मारा गया है समय–समय पर
वो मैं ही थी हिन्दी भाषा, वो मैं ही थी हिन्दी भाषा।''[6]

'दुनिया की सर्वाधिक वैज्ञानिक भाषा हिन्दी है जो देवनागरी लिपि में लिपिबद्ध है।'[7]

''मेरी ताकत मेरा साहस है हिन्दी
मेरे सपने मेरे अपने है हिन्दी
मेरे समाज की हर कड़ी है हिन्दी
हिन्दी में रहते मैं हूँ हिन्दी
समाज में सैनिक–सी खड़ी है हिन्दी
मैं और मेरा हम वतन है हिन्दी।''[8]

सभी भारतीय भाषाओं को हिन्दी से संलग्न किया जाए व सभी पुस्तकों को जो विद्यालय से विश्वविद्यालयों के स्तर तक हैं, अनूदित किया जाए। सभी राष्ट्रीय व राज्य स्तरीय कार्यालयों में हिन्दी अनुवाद कर्ताओं के रूप में रोजगार उपलब्ध हों। हिन्दी भाषा को राष्ट्रीय भाषा बनाने में कानूनी रूप देना जरूरी है। भारतवर्ष में लगभग 24 संवैधानिक भाषाएं है परन्तु राष्ट्रीय भाषा नही है। 'यदि भाषाएं बची रहती है तो व्यक्ति भी अपने परिवेश से जुड़े रहते है। '[9]

अध्ययन का उद्देश्य

वास्तव में हिन्दी हमारा राष्ट्रीय स्वाभिमान है जो राजनीति के भंवर में फंसी हुयी सी लगती है।

निष्कर्ष

एक भाषा लोगों को आपस में जोड़ने का काम करती है परन्तु इसके साथ–साथ वह लोगों को उसके परिवेश से भी जोड़े रखती है। यदि हमें देश को जोड़ना है तो सबसे पहले हमें अपने देश की भाषा हिन्दी को प्रत्येक नागरिक के साथ जोड़ना होगा। जिस दिन हिन्दी भाषा प्रत्येक देशवासी के साथ जुड़ जाएगी उसी दिन देश अपने आप जुड़ जाएगा और अपनी दोहरी भाषायी मानसिकता को खत्म कर पाएगा। वास्तव में हिन्दी हमारा राष्ट्रीय स्वाभिमान है जो राजनीति के भंवर में फसी हुई–सी लगती है। हमारे देश भारत से पीछे आजाद होने वाले इजरायल आदि देशों ने अपनी भाषा के महत्त्व को समझा था और आज वे भाषाएं विश्व में आदरणीय बनी हुई है, लेकिन बिना किसी लाग–लपेट के मैं हिन्दी का सेवक होने के नाते यह बात खरे रूप में कह रहा हूँ कि हिन्दी को राजनीति के दोगलेपन से दूर करके सच्ची नियति से राष्ट्रीय स्वाभिमान और राष्ट्रभाषा की मान्यता एवं स्वीकार्यता पर दृढ़ निश्चय से विचार किया जाना चाहिए।

अंत टिप्पणी

1. *डॉ0 सुधेश, हिन्दी की दशा और दिशा, जनवाणी प्रकाशन प्रा0 लि0 30/35–36, गली न0 9, विश्वास नगर, दिल्ली, पृ0–12।*
2. *रामचरण, युयुत्सु, राजभाषा हिन्दी का विकास दशा व दिशा, पत्रिका 'हिन्दी प्रचार वाणी', दिसम्बर 2018, कर्नाटक महिला हिन्दी सेवा समिति, चामराजपेट, बेंगलुरू, पृ0–26।*
3. *रामचरण, युयुत्सु, राजभाषा हिन्दी का विकास दशा व दिशा, पत्रिका 'हिन्दी प्रचार वाणी', दिसम्बर 2018, कर्नाटक महिला हिन्दी सेवा समिति, चामराजपेट, बेंगलुरू, पृ0–27।*
4. *डॉ0 विरेन्द्र सिंह यादव, 'राष्ट्रभाषा हिन्दीः समस्या और समाधान' पत्रिका हिन्दी ज्योति बिम्ब, हिन्दी मासिक पत्रिका, हिन्दी प्रचार–प्रसार संस्थान, जयपुर, अक्टूबर–2005, पृ0 18।*
5. *बालकवि बैरागी 'मैं दीप हूँ तुम्हारा' हिन्दुस्तानी जबान, त्रैमासिक पत्रिका, हिन्दुस्तानी प्रचार सभा, मुम्बई, जुलाई–सितम्बर, 2018, मुम्बई पृ0 31।*
6. *सुशील कुमार, स्वयंकृत।*
7. *रामचरण यादव, बैतूल, सिद्ध और शुद्ध भाषा–''हिन्दी'', पत्रिका–हिन्दी प्रचार वाणी, कर्नाटक महिला हिन्दी सेवा समिति, चामराजपेट, बेंगलुरू, जून 2018, पृ0 4।*
8. *सुशील कुमार, स्वयंकृत।*
9. *जय प्रकाश सिंह, पानी की भाषा, पत्रिका 'कर्नाटक हिन्दी सभा, पत्रिका, जुलाई 2018, कर्नाटक हिन्दी सभा (र.) मंड्या, कर्नाटक, पृ0 8।*